



अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की किताब
“गुफ़्तगू के आदाब” से चौथी क्रिस्त बनाम

फ़ुज़ूल बातों

से बचने की फ़ज़ीलत

सफ़हहत : 18

- | | |
|--|----|
| अल्लाह पाक को फ़ुज़ूल बातें ना पसन्द हैं | 02 |
| आदमी की ख़ूबसूरती क्या है ? | 06 |
| बोलने और चुप रहने की दो क्रिस्में | 14 |
| शैतान का सब से बड़ा हथियार | 16 |

शेख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अज़्ज़ार क़ादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّنَ
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फुज़ूल बातों से बचने की फ़ज़ीलत⁽¹⁾

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 18 सफ़हात का रिसाला “फुज़ूल बातों से बचने की फ़ज़ीलत” पढ़ या सुन ले उसे फुज़ूलिय्यात से बचा, नेक बना और बार बार हज व दीदारो मदीना का शरफ़ अत्ता फ़रमा ।

امينِ بِحَاجَةِ خَاتَمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना काम आ गया

हज़रते अबू बक्र शिब्ली बग़दादी फ़रमाते हैं : मैं ने अपने मर्हूम पड़ोसी को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ؟ यानी अल्लाह पाक ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? वोह बोला : मैं सख़्त हौलनाकियों से दो चार (यानी मुसीबत में मुब्तला) हुवा, मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात भी मुझ से नहीं बन पड़ रहे थे, मैं ने दिल में ख़याल किया कि शायद मेरा ख़ातिमा ईमान पर नहीं हुवा ! इतने में आवाज़ आई : “दुनिया में ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल की वजह से तुझे येह सज़ा दी जा रही है ।” अब अज़ाब के फ़रिश्ते मेरी तरफ़ बढ़े । इतने में एक ख़ूबसूरत उम्दा खुशबू वाले साहिब मेरे और अज़ाब के दरमियान आड़ हो गए और उन्होंने ने मुझे मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाबात याद दिला दिए और मैं ने उसी तरह जवाबात दे दिए, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ! अज़ाब मुझ से दूर हुवा । मैं ने उन बुजुर्ग से अर्ज़ की : अल्लाह पाक आप पर रहम फ़रमाए आप कौन हैं ? फ़रमाया : “तेरे कसरत के साथ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से मैं पैदा हुवा हूं और मुझे हर मुसीबत के वक़्त तेरी मदद पर मामूर किया गया ।”

(القول البدیع، ص 260)

1... येह मज़मून अमीरे अहले सुन्नत دامش برکاتکم العالیه की किताब “गुफ़्तगू के आदाब” सफ़हा 51 ता 67 से लिया गया है ।

आप का नामे नामी ऐ सल्ले अला

हर जगह हर मुसीबत में काम आ गया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यहां आज कल बद क्रिस्मती से खामोश रहने वाले बहुत कम मिलते हैं। बाज्रों की ज़बान दिन भर चलती रहती है, सिर्फ़ सोते वक़्त ज़बान को कुछ आराम मिलता होगा और बाज़ तो नींद में भी बातें करने लग जाते हैं ! जो ज़ियादा बोलता है बसा औक्रात उस के मुंह से झूट भी निकल सकता है, ग़ीबत भी हो सकती है, चुगलखोरी भी कर बैठता होगा, राज़ भी फ़ाश कर डालता होगा, दिल आज़ारियां भी करता रहता होगा, लोगों की हर बात को कैंची की तरह काटते रहने की वजह से अपना वक्रार भी खो बैठता होगा, बारहा ऐसा भी होता होगा कि बोल कर पछताता होगा, फिर बातूनी शाख्स के “बक बक” करने से दूसरों को भी तो बोरियत होती है, लोग बेज़ार हो कर उस से पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं। अल ग़रज़ ज़ियादा बातें करने में बे शुमार नुक्रसानात हैं। इसी लिए तो किसी ने कहा है कि “न बोलने में नौ गुन” (यानी न बोलने में 9 खूबियां) क्यूंकि खामोश आदमी बहुत सारी आफ़तों से अम्म में रहता है। अल्लाह पाक हम सब को बे ज़रूरत बातें करने से महफूज़ फ़रमाए और ज़बान की आफ़तों से बचाए। امين بِنِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

अल्लाह पाक को फुज़ूल बातें ना पसन्द हैं

अल्लाह पाक को फुज़ूल बातें ना पसन्द हैं, कुरआने करीम, पारह 18 सूरतुल मोमिनून आयत 3 में फुज़ूल बातों के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाता है : ﴿وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ النَّعْمِ مُعْتَدُونَ﴾ (आसान तर्जमए कुरआन कन्ज़ुल इरफ़ान : और वोह जो फुज़ूल बात से मुंह फेरने वाले हैं)

आयते मुबारका की तफ़सीर

इस आयते मुबारका में कामयाबी हासिल करने वाले मोमिनों की दूसरी



ख़ूबी का बयान फ़रमाया गया है कि वोह हर लहवो बातिल से बचे रहते हैं। इस आयते मुबारका में “लऱव” का तज़िकरा है इस सिल्सिले में तफ़्सीर सिरातुल जिनान जिल्द 6 सफ़हा 499 ता 501 पर है : अल्लामा अहमद सावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “लऱव से मुराद हर वोह क़ौल, फ़ेल और ना पसन्दीदा या मुबाह काम है जिस का मुसलमान को दीनी या दुनियवी कोई फ़ायदा न हो जैसे मज़ाक़ मस्खरी, बेहूदा (यानी फुज़ूल) गुफ़्तगू, खेलकूद, फुज़ूल कामों में वक़्त ज़ाएअ करना, शहवात (यानी ख़्वाहिशात) पूरी करने में ही लगे रहना वग़ैरा वोह तमाम काम जिन से अल्लाह पाक ने मना फ़रमाया है। ख़ुलासा येह है कि मुसलमान को अपनी आख़िरत की बेहतरी के लिए नेक आमाल करने में मसरूफ़ रहना चाहिए या वोह अपनी ज़िन्दगी बसर करने के लिए ब क़दरे ज़रूरत (हलाल) माल कमाने की कोशिश में लगा रहे।”

(1357, 1356/4:3, تحت الاية, 18, المؤمنون, تحت الاية)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

बेकार बातों से बचने की तरगीब

अहादीस में भी ला यानी और बेकार कामों से बचने की तरगीब दी गई है, चुनान्चे हज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “आदमी के इस्लाम की अच्छाई में से येह है कि वोह ला यानी चीज़ छोड़ दे।” (1718: حديث: 403/2, موطا امام مالك) यानी जो चीज़ कार आमद न हो उस में न पड़े, ज़बान, दिल और दीगर आज़ा को बेकार बातों की तरफ़ मुतवज्जेह न करे।

(बहारे शरीअत, 3 /520, हिस्सा : 16)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

नजात क्या है ?

हज़रते उक़्बा बिन आमिर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ की : नजात क्या है ? इरशाद



फ़रमाया : अपनी ज़बान पर क़ाबू रखो और तुम्हारा घर तुम्हारे लिए गुन्जाइश रखे (यानी बेकार इधर उधर न जाओ) और अपनी ख़ता पर आंसू बहाओ।

(ترمذی، 4/182، حدیث: 2414)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

ज़बान की हिफ़ाज़त करने की ज़रूरत और

उस के फ़वाइदो नुक्सानात

याद रहे कि ज़बान की हिफ़ाज़त व निगहदाशत और फ़ुज़ूलिय्यात व लम्बियात से उसे बाज़ रखना बहुत ज़रूरी है क्योंकि ज़ियादा सरकशी और सब से ज़ियादा फ़साद व नुक्सान इसी ज़बान से रूनुमा होता है और जो शख्स ज़बान को खुल्ली छुट्टी दे देता और उस की लगाम ढीली छोड़ देता है तो शैतान उसे हलाकत में डाल देता है। ज़बान की हिफ़ाज़त करने का एक फ़ायदा यह भी है कि इस से नेक आमाल की हिफ़ाज़त होती है क्योंकि जो शख्स ज़बान की हिफ़ाज़त नहीं करता बल्कि हर वक़्त गुफ़्तगू में मसरूफ़ रहता है तो ऐसा शख्स लोगों की ग़ीबत में मुब्तला होने से बच नहीं पाता, यंही उस से कुफ़्रिया अल्फ़ाज़ निकल जाने का बहुत अन्देशा (यानी RISK) रहता है और येह दोनों ऐसे अमल हैं जिस से बन्दे के नेक आमाल ज़ाएअ हो जाते हैं।

खजूरों का थाल (वाक़िआ)

हज़रते इमाम हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ से किसी शख्स ने कहा : फ़ुलां शख्स ने आप की ग़ीबत की है। येह सुन कर आप ने ग़ीबत करने वाले आदमी को खजूरों का थाल भर कर रवाना किया और साथ में येह कहला भेजा : सुना है कि तुम ने मुझे अपनी नेकियां हदिया (यानी GIFT) की हैं, तो मैं ने उन का बदला देना बेहतर जाना (इस लिए खजूरों का येह थाल हाज़िर है।) (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 65)



लोग कहीं तुम्हारे दांत न तोड़ दें

और दूसरा फ़ायदा येह है कि ज़बान की हिफ़ाज़त करने से इन्सान दुनिया की आफ़ात से महफूज़ रहता है, चुनान्चे हज़रते सुफ़यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرमाते हैं : ज़बान से ऐसी बात न निकालो जिसे सुन कर लोग तुम्हारे दांत तोड़ दें और एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرमाते हैं : अपनी ज़बान को बे लगाम न छोड़ो ताकि येह तुम्हें किसी फ़साद में मुब्तला न कर दे। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 66)

एक फुज़ूल सुवाल की अनोखी सज़ा (वाक़िआ)

नीज़ ज़बान की हिफ़ाज़त न करने का एक नुक्सान येह है कि बन्दा ना जाइज़ो हराम, लगव और बेकार बातों में मसरूफ़ हो कर गुनाहों में मुब्तला होता और अपनी जिन्दगी की क़ीमती तरीन चीज़ “वक्रत” को ज़ाएअ कर देता है। हज़रते हस्सान बिन सिनान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के बारे में मरवी है कि आप एक बालाख़ाने (यानी मकान की छत पर बनाए जाने वाले कमरे) के पास से गुजरे तो उस के मालिक से पूछा : “येह बालाख़ाना बनाए तुम्हें कितना अर्सा गुजरा है ?” येह सुवाल करने के बाद आप को दिल में सख़्त नदामत (यानी शर्मिन्दगी) हुई और नफ़स को मुखातब करते हुए यूं फ़रमाया : “ऐ मगरूर नफ़स ! तू फुज़ूल और ला यानी सुवालात में क़ीमती तरीन वक्रत को ज़ाएअ करता है !” फिर उस फुज़ूल सुवाल के कफ़रारे में आप ने एक साल रोज़े रखे। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 65)

दोज़ख़ का अज़ाब कोई बरदाश्त नहीं कर सकता

और दूसरा नुक्सान येह है कि ना जाइज़ व हराम गुफ़्तगू की वजह से इन्सान क्रियामत के दिन जहन्नम के दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला हो सकता है जिसे बरदाश्त करने की ताक़त किसी में नहीं। लिहाज़ा अफ़्रियत इसी में है कि बन्दा अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करे और इसे उन बातों के लिए इस्तिमाल करे जो उसे दुनिया और

आखिरत में नफ़ा दें। अल्लाह पाक तमाम मुसलमानों को ज़बान की हिफ़ाज़त व निगहदाशत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।
 امين بِجَاوِزَاتِهِ السَّيِّئَاتِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 (तफ़सीर सिरातुल जीनान, पा. 18, अल मोमिनून, तहतल आयह : 3, 6/499 ता 501)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

भारी आमाल

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ बयान करते हैं कि अल्लाह पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें ऐसा अमल न बताऊं जो बदन पर हल्का और मीज़ान (यानी SCALE) में भारी हो?” मैं ने अर्ज़ की : क्यूं नहीं। इरशाद फ़रमाया : वोह ख़ामोशी, अच्छे अख़लाक़ और बे फ़ायदा गुफ़्तगू को छोड़ देना है।
 (الصمت لابن ابي الدنيا، موسوعه، 7/87، حديث: 112)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

आदमी की ख़ूबसूरती क्या है ?

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने चचाजान हज़रते अब्बास से इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी ख़ूबसूरती ने मुझे तअज्जुब में डाल दिया। हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आदमी की ख़ूबसूरती क्या है ? आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : उस की ज़बान।
 (ادب الدنيا والدين، ص 241)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नसीहत

जन्नत के नौजवानों के सरदार, सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते इमामे हुसैन رَضِيَ اللهُ عَنْهُ बयान करते हैं : मैं ने अपने नानाजान, मक्के मदीने के सुलतान عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ को सहाबए किराम को जो नसीहतें फ़रमाते सुना उन में

से एक यह भी है : “खुशाखबरी है उस के लिए जो फुज़ूल गुप्तगू से रुका रहा।”

(حلیة الاولیاء، 3/236، حدیث: 3817)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

दुआए मुस्तफ़ा

हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ عَنْهُ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तीन बार यह बात इरशाद फ़रमाई : “अल्लाह पाक उस पर रहम फ़रमाए ! जो बात करता है तो फ़ायदा (यानी सवाब) पाता है और खामोश रहता है तो सलामत रहता है।”

(شعب الایمان، 4/241، حدیث: 4938)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अल्लाह पाक की नज़रे इनायत फिर जाने की अ़लामत

फ़रमाने इमाम हसन बसरी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ : बन्दे का बे फ़ायदा कामों में मशगूल होना इस बात की अ़लामत (यानी निशानी) है कि अल्लाह पाक ने उस से अपनी नज़रे रहमत फेर ली है।

(التمهيد لابن عبد البر، 4/179)

फुज़ूल बोलने वाले के गुनाह सब से ज़ियादा

सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا बयान करते हैं : मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : क्रियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा उस के गुनाह होंगे जो सब से ज़ियादा ला यानी (यानी बेकार। फुज़ूल) बातें करे।

(جامع صغير، ص 86، حدیث: 1386)

शर्हे हदीस : इस लिए कि जो ज़ियादा बातें करेगा उस में बेकार और ख़िलाफ़े शरीअत बातें भी ज़ियादा होंगी तो ख़िलाफ़े शरीअत बातों से उस के गुनाह बढ़ेंगे और इस तरफ़ उस की तवज्जोह भी न होगी।

(التيسير شرح جامع صغير، 1/200-فتاوى رضوية، 28/645 تسهیلاً)



हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अबी औफ़ा का ज़िक्रे ख़ैर

आइए ! येह रिवायत बयान करने वाले सहाबिए नबी हज़रते अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا के मुबारक हालात सुनते हैं, आप का नाम : अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा और कुन्यत : अबू मुआविया है ।

ज़कात देने वाले के लिए दुआ

सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا बयान करते हैं : नबिये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में मेरे वालिद (अबी औफ़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ) ज़कात ले कर हाज़िर हुए तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह दुआ दी : اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى آلِ أَبِي أَوْفَى : यानी ऐ अल्लाह ! अबू औफ़ा की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा !

(بخاری، 1/504، حدیث: 1497 مختصراً)

हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ इस हदीसे पाक की वज़ाहत में लिखते हैं : हज़रते अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रिब्रया तौर पर खुदा का शुक्र अदा कर रहे हैं कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दुआएं हमें और हमारे वालिदे मोहतरम को भी मिल चुकी हैं । बाज़ ने फ़रमाया कि यहां लफ़ज़ आल ज़ाइद है मगर हक़ येह है कि आल अपने माना ही में है, हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सिर्फ़ उन लोगों ही को नहीं बल्कि उन के बाल बच्चों सारे घर वालों को भी दुआएं देते हैं ।

(मिरआतुल मनाजीह, 3/11)

सहाबिए नबी से इमाम अबू हनीफ़ा की मुलाक़ात

मिरआत में है : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا कूफ़े में 87 हिजरी में वफ़ात पाने वाले आख़िरी सहाबी हैं । आप उन सहाबा से हैं जिन से हज़रते इमाम अबू हनीफ़ा (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ) की मुलाक़ात है क्यूंकि आप की वफ़ात के वक़्त इमामे आज़म की उम्र 7 साल (और बाज़ के नज़दीक 17 साल थी ।



(नुज़हतुल करारी, 1/70, माखूज़न, मिरआतुल मनाजीह, 5/382) अल्लाह पाक की उन पर
रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो। امین بجاہِ خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

फुज़ूल बात किसे कहते हैं ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ “इहयाउल उलूम” में फ़रमाते हैं : अगर एक कलिमे (यानी लफ़्ज़) से इस (बात करने वाले) का मक़सूद (यानी मतलब) हासिल हो सकता हो और वोह दो कलिमे (यानी दो अल्फ़ाज़) इस्तimal करे तो दूसरा कलिमा फुज़ूल यानी हाज़त (यानी ज़रूरत) से ज़ियादा होगा। (احياء العلوم، 3/141) अगर एक लफ़्ज़ से काम न चलता हो तो ऐसी सूरत में दो या ज़रूरत के मुताबिक़ जितने भी अल्फ़ाज़ बोले गए वोह फुज़ूल नहीं। जिन चीज़ों में नुक़सान है और मुआख़ज़ा (यानी पूछ गछ) और अज़ाब है उन से बचना तो हर इन्सान की अक़ल का भी तक्राज़ा है लेकिन जो बातें ऐसी हों जिन से न नफ़ा हो न नुक़सान वोह भी दर हक़ीक़त नुक़सान ही की बातें हैं क्यूंकि जितनी देर ऐसी बातें कीं उतनी देर ज़िक़्रो दुरूद हो सकता था, तिलावत कर सकते थे। इन मनाफ़ेअ (यानी फ़ायदों) का ज़ाएअ होना नुक़सान नहीं तो और क्या है ? फिर जब फुज़ूल बातें शुरूअ हो जाती हैं तो बढ़ते बढ़ते (बसा औक्रात) लोगों की बुराइयों और ग़ीबतों तक नौबत पहुंच जाती है। इस लिए ख़ैर (यानी भलाई) इसी में है कि ख़ामोश रहे या अल्लाह पाक का ज़िक़र करे और बक्रदरे ज़रूरत दुनिया की थोड़ी बहुत बात करे जो जाइज़ उमूर से मुतअल्लिक़ हो, दुनिया की जाइज़ बातों की कसरत भी दिल में क़सावत यानी सख़्ती पैदा होने का ज़रीआ बन जाती है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



खामोशी फ़िक्रे आख़िरत से ख़ाली हो तो ग़फ़लत है

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का इरशाद मुबारक है कि अल्लाह पाक के ज़िक्र से जो गुफ्तगू ख़ाली है वोह लव (यानी फुज़ूल) है और जो ख़ामोशी फ़िक्रे आख़िरत से ख़ाली है वोह ग़फ़लत है और जो निगाहे इब्रत से ख़ाली है वोह फुज़ूल व बेकार है। वोह शरख़स मुबारक (यानी बरकत वाला) है जिस की बात चीत में अल्लाह पाक का ज़िक्र है, जिस की ख़ामोशी में ग़ौरो फ़िक्र है, जिस की आंख में इब्रत है। (تنبيه الغافلین، ص 115)

ग़फ़लत किसे कहते हैं ?

ऐ आशिक़ाने रसूल ! इस फ़रमाने ईसा عَلَيْهِ السَّلَام में येह भी है कि “जो ख़ामोशी फ़िक्रे आख़िरत से ख़ाली है वोह ग़फ़लत है।” आइए ! जानते हैं कि ग़फ़लत क्या है। “अत्तअरीफ़ात” में है : **مَتَابَعَةُ النَّفْسِ عَلَى مَا تَشْتَهِيهِ** : यानी “नफ़स को ख़्वाहिशात के पीछे लगाए रखना ग़फ़लत कहलाता है।” (التعريفات للبحراني، ص 116)

गाफ़िलों की मज़म्मत में कुरआने करीम पारह 9 सूरतुल आराफ़ आयत 205 में इरशादे इलाही है :

وَإِذْ كُنَّا نَسُودُكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ
وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُنُ مِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٢٠٥﴾

आसान तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और अपने रब को अपने दिल में याद करो गिड़ गिड़ाते हुए और डरते हुए और बुलन्दी से कुछ कम आवाज़ में, सुबहो शाम और गाफ़िलों में से न होना।

मुझे तुम पर ग़फ़लत का ख़ौफ़ है

बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीसे पाक में येह भी है : अल्लाह पाक की क़सम ! मुझे तुम पर फ़क्र (यानी गुर्बत) का ख़ौफ़ नहीं लेकिन मुझे डर है कि तुम पर दुनिया फैला दी जाएगी जैसा कि तुम से पहली क़ौमों पर फैलाई गई थी, पस तुम भी इस



दुनिया की खातिर पहले लोगों की तरह बाहम (यानी आपस में) मुक्काबला करोगे और येह तुम्हें ग़फ़लत में डाल देगी जिस तरह उस ने पिछली क्रौमों को ग़ाफ़िल कर दिया।

(بخاری، 4/225 تا 226، حدیث: 6425)

बल्कि नमाज़ें क़ज़ा होने पर रो रहा हूँ

“मुकाशाफ़तुल कुलूब” में है : हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अली दक्काक़ رحمه الله عليه फ़रमाते हैं : एक बहुत बड़े वलियुल्लाह رحمه الله عليه सख़्त बीमार थे, मैं इयादत के लिए हाज़िर हुवा, इर्द गिर्द मोतक्रिदीन का हुजूम था, वोह बुजुर्ग़ رحمه الله عليه रो रहे थे। मैंने अर्ज़ की : ऐ शैख़ ! क्या दुनिया छूटने पर रो रहे हैं ? फ़रमाया : नहीं बल्कि नमाज़ें क़ज़ा होने पर रो रहा हूँ। मैंने अर्ज़ की : हुज़ूर ! आप की नमाज़ें क्यूं कर क़ज़ा हो गईं ? फ़रमाया : मैंने जब भी सज्दा किया तो ग़फ़लत के साथ और जब सज्दे से सर उठाया तो ग़फ़लत के साथ और अब ग़फ़लत ही में मौत से हम आग़ोश हो रहा हूँ, फिर एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींच कर चार अरबी अश्आर पढ़े जिन का तर्जमा येह है : ﴿1﴾ मैंने अपने हशर (यानी उठाए जाने), क्रियामत के दिन और क़ब्र में अपने रुख़सार (यानी गाल) के पड़ा होने के बारे में ग़ौर किया ﴿2﴾ (मुझे मिली हुई) इतनी इज़्जतोरिफ़्ज़त (यानी बुलन्दी) के बाद (भी) मैं अकेला पड़ा हूंगा और अपने जुर्म की बिना पर रेहन (यानी गिरवी) हूंगा और खाक ही मेरा तक्या होगी ﴿3﴾ मैंने अपने हिसाब की तवालत (यानी लम्बा होने) और नामए आमाल दिए जाने के वक़्त की रुस्वाई के बारे में भी सोचा ﴿4﴾ मगर ऐ मुझे पैदा करने वाले और मुझे पालने वाले ! मुझे तुझ से रहमत की उम्मीद है, तू ही मेरी ख़ताओं को बरख़शने वाला है।

(مکاشفة القلوب، ص 22)

रोता हुवा दाख़िले जहन्नम होगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए में किस क़दर इब्रत है ! ज़रा इन अल्लाह वालों को देखिए जिन का हर लम्हा यादे इलाही में बसर होता है मगर फिर भी अज़िज़ी का अ़ालम येह है कि अपनी इबादात व रियाज़ात को किसी खातिर में नहीं लाते और अल्लाह पाक की बे नियाज़ी और उस की ख़ुफ़िया तदबीर



से डरते हुए गिर्या व ज़ारी करते (यानी रोते धोते) हैं। उन ग़फ़लत के मारों पर सद करोड़ अफ़सोस कि नेकी के नून का नुक़ता तक जिन के पल्ले नहीं, इख़लास का दूर दूर तक नामो निशान नहीं मगर हाल येह है कि अपनी इबादतों के बुलन्द बांग दावे करते नहीं थकते ! अल्लाह पाक के नेक बन्दे गुनाहों से महफ़ूज़ होने के बावुजूद ख़ौफ़े इलाही से थर थराते कप कपाते और टप टप आंसू गिराते हैं मगर ग़फ़लत शिआर बन्दों का हाल येह है कि बे धड़क मासियत (यानी ना फ़रमानी) का सिल्लिसला चलाते, अपने गुनाहों का आम एलान सुनाते और फिर उस पर ज़ोर ज़ोर से क्रहक्रहे लगाते ज़रा नहीं लजाते, कान खोल कर सुनिए ! मुकाशफ़तुल कुलूब में है : हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رضي الله عنهما फ़रमाते हैं : “जो हंस हंस कर गुनाह करेगा वोह रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा।” (مكاشفة القلوب، ص 275)

गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही !

बुरी आदतें भी छुड़ा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश, स. 100)

बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में बिशारत दी

ऐ आशिक़ाने रसूल ! ग़फ़लत की नींद उड़ाने, गुनाहों की आदत छुड़ाने और सुन्नतों पर अमल का ज़ब्बा बढ़ाने के लिए दावते इस्लामी के सुन्नतें सीखने सिखाने के क्राफ़िलों में सफ़र कीजिए। आप की तरगीब के लिए एक ईमान अफ़रोज़ “मदनी बहार” पेशे ख़िदमत है : चुनान्चे एक इस्लामी भाई दीनी माहौल में आने से पहले मुख्तलिफ़ तरह के गुनाहों में मुब्तला थे, वोह जिस्मानी तौर पर अगर्चे सेहतमन्द थे लेकिन इबादत के मुआमले में बहुत कमज़ोर थे, जैसे जैसे जवानी के करीब होते रहे वैसे वैसे नेकियों से दूर होते चले गए। बुराइयों में ज़िन्दगी गुज़ारने लगे। गाने बाजे, फ़िल्में ड्रामे, झूट, ग़ीबत और तरह तरह के गुनाहों में वक़्त बरबाद होता रहा और सिर्फ़ येही नहीं बल्कि उन की डाउनलॉडिंग की दुकान थी जिस के ज़रीए वोह खुद तो गुनाह करते ही थे मज़ीद दूसरों के मोबाइल में फ़िल्में ड्रामे, गाने बाजे

डाउनलोड कर के उन के इस गुनाह में शामिल हो जाते थे और उस के पैसे भी लेते थे। उन की ज़िन्दगी गुनाहों के अन्धेरे में डूबी हुई थी, हत्ता कि वोह अपने आप को दुनिया का सब से बुरा इन्सान समझने लगे, अलबत्ता दावते इस्लामी से उन्हें बचपन ही से महबूबत थी जिस बिना पर वोह किसी तरह इस्लामी भाइयों से राबिता कर के तीन दिन के क्राफ़िले के मुसाफ़िर बन गए। क्राफ़िले में उन्हें बहुत सीखने को मिला, जिस की वजह से उन की महबूबत दावते इस्लामी से मज़ीद बढ़ गई। एक रोज़ जब येह घर के हालात की वजह से परेशान थे और इसी परेशानी के आलम में जब येह सोए तो ख़्वाब में देखा कि एक बुज़ुर्ग उन से फ़रमा रहे हैं कि “छोटे भाई को ले कर फ़ैज़ाने मदीना आ जाना, إِنَّ شَاءَ اللهُ सब कुछ ठीक हो जाएगा।” इतना सुनना था कि उन की आंख खुल गई। फिर उन्होंने ने घर वालों को येह ख़्वाब बताया और छोटे भाई को ले कर फ़ैज़ाने मदीना जाने की इजाज़त चाही, जिस पर उन के घर वाले राज़ी हो गए। फ़ैज़ाने मदीना पहुंच कर उन दोनों ने पूरे माहे रमज़ान का एतिकाफ़ किया, الْحَمْدُ لِلَّهِ एतिकाफ़ की बरकत से उन्होंने ने अपने तमाम बुरे कामों से तौबा की और सर पर इमामे शरीफ़ का ताज सजाने के साथ साथ हुज़ूर ग़ौसे आजम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के मुरीदों में भी शामिल हो गए।

ऐ आशिक़ाने औलिया ! जवानी में तौबा कर लेना और अल्लाह पाक की इताअत व फ़रमां बरदारी में मशगूल हो जाना बहुत बड़ी सज़ादत है। अल्लाह के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का खुशियों भरा फ़रमान है : “जवानी में तौबा करने वाला शख्स अल्लाह पाक का महबूब (यानी प्यारा) है।” (کتاب التوبة مع موسوعه امام ابن ابی دنیا، 3/422، حدیث: 184) अपनी जवानी इबादत में गुज़ार देने वाले को क्रियामत के दिन अर्श का साया नसीब होगा। (مسلم، ص 399، حدیث: 2380) नीज़ सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि जवानी की इबादत बुढ़ापे की इबादत से अफ़ज़ल है कि इबादात का अस्ल वक़्त जवानी है।



कर जवानी में इबादत काहिली अच्छी नहीं जब बुढ़ापा आ गया कुछ बात बन पड़ती नहीं
है बुढ़ापा भी ग़नीमत जब जवानी हो चुकी यह बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दम आ गई

(मिरआतुल मनाजीह, 3/167)

अल्लाह पाक हमें ज़िन्दगी की आखिरी सांस तक अपना फ़रमां बरदार रखे और इबादत में इख़लास व लज़ज़त इनायत अता फ़रमाए।

امین بجاهِ خاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

बोलने और चुप रहने की दो क़िस्में

फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है: **إِمْلَاءُ الْخَيْرِ خَيْرٌ مِنَ السُّكُوتِ وَالسُّكُوتُ** : **إِمْلَاءُ الشَّرِّ** यानी अच्छी बात कहना खामोशी से बेहतर है और खामोश रहना बुरी बात कहने से बेहतर है। (4993: حديث: 256/4, شعب الايمان) हज़रते अली बिन उस्मान हजवेरी हनफ़ी अल मारूफ़ दाता गंज बरख़श رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ “कश्फ़ूल महजूब” में फ़रमाते हैं: कलाम (यानी बोलना) दो तरह का होता है। एक कलामे हक़ (यानी अच्छी गुफ़्तगू) और दूसरा कलामे बातिल (यानी ग़लत व बेकार गुफ़्तगू), इसी तरह खामोशी भी दो तरह की होती है: **﴿1﴾** बा मक्सद खामोशी (मसलन फ़िक्रे आखिरत या शरई अहकाम पर ग़ौरो ख़ौज़ वग़ैरा के लिए चुप रहना) **﴿2﴾** ग़फ़लत भरी (या مَعَادِ اللهُ गन्दे तसव्वुरात या दुनिया के बेजा खयालात से भरपूर) खामोशी। हर शख्स को सुकूत (यानी खामोशी) की हालत में ख़ूब अच्छी तरह ग़ौर कर लेना चाहिए कि अगर इस का बोलना हक़ (यानी अच्छा) है तो अब बोलना उस की खामोशी से बेहतर है और अगर उस का बोलना बातिल (यानी ग़लत या फुज़ूल) है तो ऐसे मौक़अ पर उस की खामोशी उस के बोलने से बेहतर है। हुज़ूर दाता गंज बरख़श अली हजवेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ गुफ़्तगू के हक़ या बातिल होने के मुतअल्लिक



समझाने के लिए एक वाक़िआ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : हज़रते अबू बक्र शिब्ली बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने एक मरतबा बग़दाद शरीफ़ के एक महल्ले से गुज़रते हुए एक शख्स को सुना वोह कह रहा था : اسْكُوتْ خَيْرٌ مِنَ الْكَلَامِ يानी “खामोशी बोलने से बेहतर है ।” आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने उसे फ़रमाया : (चूँकि हर सूत्र में खामोशी अच्छी नहीं लिहाज़ा) “तेरे (येह जुम्ले) बोलने से तेरा खामोश रहना अच्छा है और मेरा बोलना खामोश रहने से बेहतर है ।” (كشاف المحجوب، ص 402 ماخوذاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

ज़बान की हिफ़ाज़त न करने वाले पर शैतान ग़लबा पा लेता है

ज़ियादा “बक बक” करने वालों पर शैतान ग़ालिब आ जाता है क्यूँकि जब आदमी ज़ियादा बातूनी होता है तो ख़ताओं का इम्कान बढ़ जाता है और हो सकता है कि शैतान उस से गुनाह करवाने में कामयाब हो जाए । अलबत्ता जो खामोश रहने का आदी है वोह शैतान पर ग़लबा (यानी बरतरी, जीत) पा लेता है । हज़रते अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है, एक आदमी ने मक्की मदनी ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अर्ज़ की : يا رسولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मुझे कोई नसीहत फ़रमाइए । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक का तक्रवा लाज़िम पकड़ लो कि तमाम भलाइयों की अस्ल (यानी जड़) है और जिहाद को लाज़िम पकड़ लो कि येह अहले इस्लाम की रहबानियत (यानी गोशा नशीनी) है और ज़िक्रुल्लाह व तिलावते कुरआने पाक की पाबन्दी करो कि येह तुम्हारे लिए ज़मीन में नूर और आस्मानों में तुम्हारे तज़िकरे का बाइस होगा और कलिमए ख़ैर (यानी अच्छी बात) के सिवा अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करो कि इस की बदौलत तुम शैतान पर ग़लबा पा लोगे । (معجم صغير، 2/66)



शैतान का सब से बड़ा हथियार

हज़रते इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ “इहयाउल उलूम” में फ़रमाते हैं : इन्सान को बहकाने में ज़बान शैतान का सब से बड़ा हथियार है।

(احياء العلوم، 3/133)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

सिद्दीक़े अकबर मुंह में पत्थर रख लेते

मुसलमानों के पहले खलीफ़ा आशिक़े अकबर, हज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ क़र्ई (यानी यक़ीनी) जन्मती होने के बावजूद ज़बान के मुआमले में काफ़ी एहतियात फ़रमाया करते थे, “इहयाउल उलूम” में है : “हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ अपने मुबारक मुंह में पत्थर रख लिया करते थे ताकि बात करने का मौक़ा हीन रहे।”

(احياء العلوم، 3/137)

40 बरस तक ख़ामोशी की मशक़ (वाक़िआ)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर आप वाक़ेई ख़ामोशी की आदत बनाना चाहते हैं तो इस को सन्जीदा (यानी सीरियस, SERIOUS) लेना होगा और चुप रहने की ख़ूब मशक़ (यानी PRACTICE) करनी पड़ेगी, वरना मामूली सी कोशिश से ख़ामोशी की आदत बनना दुश्वार है। ज़बान के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल की तबाहकारियों से खुद को डराते हुए ख़ामोशी की आदत बनाने की भरपूर कोशिश फ़रमाइए رَبِّ سَاءَ اللَّهُ कामयाबी आप के क़दम चूमेगी। आइए ! एक कोशिश करने वाले की इस्तिक्रामत का वाक़िआ सुनते हैं, हज़रते अरताह बिन मुन्ज़िर رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक साहिब चालीस साल तक ख़ामोश रहने की इस तरह “मशक़” (यानी PRACTICE) करते रहे कि अपने मुंह में पत्थर रख लेते, यहां तक कि



(नमाज़ या अज़कार या) खाने या पीने या सोने के इलावा वोह पत्थर मुंह से न निकालते। (الصمت مع موسوعه ابن ابی الدنیا، 7/256، قول نمبر: 438)

गुफ़्तगू लिख कर उस का जाइज़ा लेने वाले ताबेई बुजुर्ग

ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन ख़ुसैम رضی اللہ عنہ ने 20 साल तक दुनियावी बात ज़बान से नहीं की, जब सुबह होती तो क़लम व दवात (यानी INKPOT) और काग़ज़ ले लेते और दिन भर जो बोलते उसे लिख लेते और शाम को अपना मुहासबा (यानी ख़ुद से पूछ गछ) फ़रमाते। यानी उस लिखे हुए के मुताबिक़ अपनी गुफ़्तगू का जाइज़ा लेते। (137/3، احیاء العلوم، -इहयाउल इलूम (उर्दू), 3/339)

बात चीत के जाइज़े का तरीक़ा

अपनी बात चीत का “जाइज़ा” लेने का तरीक़ा येह है कि अपनी हर हर बात पर ग़ौर कर के अपने आप से पूछ गछ करे, मसलन बग़ैर ज़बान हिलाए दिल ही दिल में ख़ुद से पूछे कि फ़ुलां बात तुम ने क्यूं की ? उस मक़ाम पर बोलने की क्या जरूरत थी ? फ़ुलां गुफ़्तगू इतने अल्फ़ाज़ में भी निमटाई जा सकती थी मगर उस में फ़ुलां फ़ुलां लफ़ज़ ज़ाइद क्यूं बोले ? फ़ुलां से बात करते हुए समझ जाने के बाद क्या ? जी ? क्या कहा ? वग़ैरा क्यूं कहा ? और सामने वाले को अपनी बात दोहराने की तकलीफ़ क्यूं दी ? फ़ुलां से जो जुम्ला तुम ने कहा वोह दिल आज़ार तन्ज़ था, तुम ने उस का नाहक़ दिल दुखा दिया चलो अब तौबा भी करो और उस इस्लामी भाई से मुआफ़ी भी मांगो, फ़ुलां बैठक (यानी गेदरिंग | GATHERING) में क्यूं गए जब कि मालूम है कि वहां फ़ुज़ूल बातें भी होती हैं और फ़ुलां फ़ुलां बात में तुम ने हां में हां क्यूं मिलाई थी ? वहां तुम्हें ग़ीबत भी सुननी पड़ गई थी बल्कि तुम ने ग़ीबत सुनने में दिलचस्पी भी ली थी चलो पक्की तौबा और ऐसी बैठकों (GATHERINGS) से दूर

रहने का भी अज़म करो। इस तरह समझदार आदमी अपनी गुप्तगू बल्कि रोज़ मर्रा के तमाम मुआमलात का जाइज़ा ले सकता है। यूं गुनाह, बे एहतियातियां, अपनी बाज़ कमज़ोरियां और ख़ामियां सामने आ सकती हैं और इस्लाह का सामान हो सकता है। दावते इस्लामी के दीनी माहौल में मुहासबे को जाइज़ा कहते हैं और दावते इस्लामी के दीनी माहौल में रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट आमाल का जाइज़ा करने और इस दौरान नेक आमाल का रिसाला पुर करने का ज़ेहन दिया जाता है।

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विदे ज़बां रहे

मेरी फ़ुज़ूल गोई की आदत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश, स. 305)

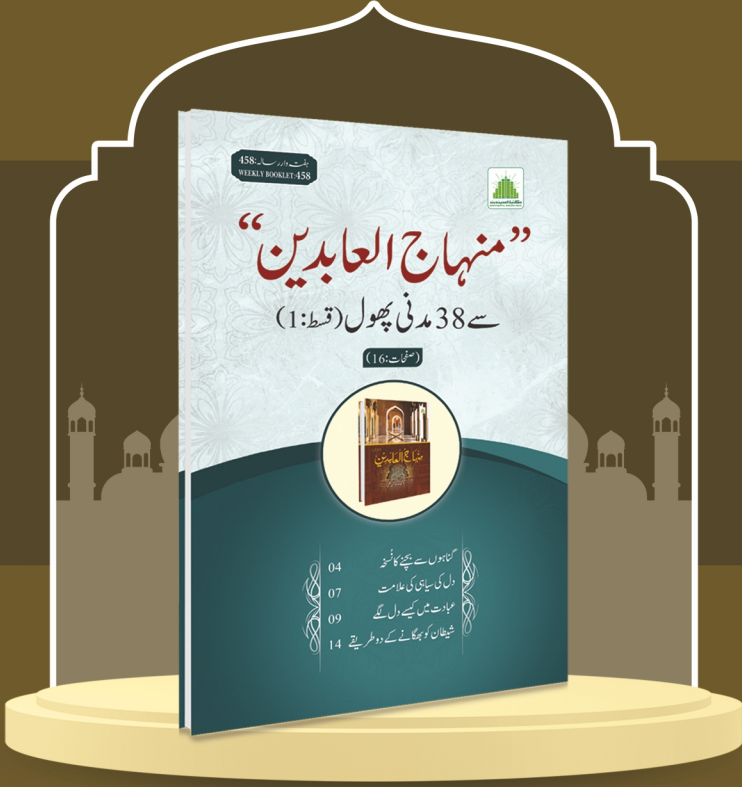
आमाल का जाइज़ा

तमाम आशिक़ाने रसूल को चाहिए कि रोज़ाना कम अज़ कम 12 मिनट अपने दिन भर के आमाल का “जाइज़ा” लें और दावते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के रिसाले “नेक आमाल” में दिए हुए ख़ाने पुर करें और हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के दावते इस्लामी के “नेक आमाल” के ज़िम्मेदार को जमा करवाएं। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** हुस्ने अख़्लाक़ और तक़्वा का ढेरों ढेर ख़जाना हाथ आएगा और इश्क़े रसूल के छलकते जाम पीने नसीब होंगे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



اگلے ہفتے کا ریسالہ



DAWAT ISLAMI
INDIA

FGN
Channel
Dekhte Rahiye



Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid,
Delhi-110006 ☎ +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi
Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha,
Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar
Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9326310099

🌐 www.maktabatulmadina.in ✉ feedbackmhind@gmail.com

📞 For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ☎ +91-9978626025